Subject - Philosophy
Class:- B.A, Part-III (Hons)
Paper:- V

धार्मिक - चेतना (प्रथम भाग)

Religious Consciousness (First Part)

धार्मिक चेतना वह प्रक्रिया है जो उन तथ्यों की विवेचना करती है जिससे मानव का झुकाव धर्म की ओर होता है। नैतिक - चेतना एवं ~~धार्मिक चेतना~~ सौंदर्य चेतना की तरह धार्मिक चेतना भी होती है। शुभ - अशुभ, उचित - अनुचित की चेतना को नैतिक चेतना कहते हैं। नैतिक चेतना का अध्ययन आचार - शास्त्र में होता है। सौंदर्य - चेतना मानवीय सौंदर्य बोध की चेतना है। सौंदर्य शास्त्र में सौंदर्य चेतना का अध्ययन होता है। धार्मिकता की चेतना को धार्मिक - चेतना कहा जाता है। धार्मिक चेतना का अध्ययन धर्म - दर्शन में होता है।

आधुनिक मनोविज्ञान ने यह

सिद्ध कर दिया है कि मन के तीन पहलू है - विचार (thinking) भावना (feeling) और इच्छा (willing)। अतः मन को एक मात्र चेतन कहना मान्य नहीं प्रतीत होता।

धार्मिक चेतना में चेतना शब्द का प्रयोग वृहत् अर्थ में किया गया है। धार्मिक चेतना के तीन पहलू है — (1) ज्ञानात्मक पहलू (Cognitive element) (2) भावनात्मक पहलू (affective element) और (3) क्रियात्मक पहलू (Conative element).

ज्ञानात्मक पहलू धर्म का वह पहलू है जो मानव को किसी शक्ति के प्रति चेतना-शील बनाता है। भावनात्मक पहलू धर्म का वह पहलू है जो मानव में उस सत्ता के प्रति प्रेम, आत्मसमर्पण तथा निर्भरता का भाव फूंकता है। क्रियात्मक पहलू वह पहलू है जो मानव को शक्ति के प्रति क्रियाशील बनाता है।

धर्म के लिए तीनों पक्ष अनिवार्य है। तीनों पक्ष को उचित स्थान देना आवश्यक है। परंतु दुर्भाग्य-वश विद्वानों ने अब तक एकांगी मत को ही अपनाया है। कुछ लोगों ने धार्मिक चेतना का मुख्य अंश एक मात्र ज्ञान को माना है।

क्या धर्म का आधार मात्र ज्ञान है? (Is religion a matter of knowledge only?) बुद्धिवादियों (Rationalists) ने इसी मत को अपनाया है। हीगेल शंकर, प्रो० मैक्समूलर इस मत के पोषक है। इस दल के लोगों ने अपने मत को पुष्ट करने के लिए निम्नलिखित तर्कों का सहारा लिया है। इन तर्कों को ज्ञानात्मक पक्ष के तर्क (Arguments in favour of cognitive element) कहा जा सकता है।

(1) धर्म का उद्देश्य पूर्णता की प्राप्ति है। धर्म की उत्पत्ति मनुष्य के अंदर निहित आध्यात्मिक भूख से होती है। जो उसे उसकी अपूर्णता से दूर कर

पूर्णता की ओर प्रेरित करता है।

(2) धर्म की उत्पत्ति का कारण लेटो ने जिज्ञासा (Curiosity) कहा है। भूकंप, आँधी, तूफान जैसी भयानक प्राकृतिक घटनाओं को देखकर प्राचीन काल के लोगों में इसके कारण को जानने की उत्सुकता हुई है।

(3) धर्म में किसी शक्तिशील सत्ता पर विश्वास होता है जिसका कोई भी इंद्रिय निरीक्षण नहीं कर सकता। भावना के द्वारा भी इस सत्ता का ज्ञान असंभव है।

(4) मनुष्य ही धार्मिक क्यों है? मानव में विवेक ही एक ऐसी चीज है जो उसे धार्मिक बना डालता है। मानव को धार्मिक बनाने में ज्ञान का प्रमुख हाथ है।

(5) धर्म का आधार यदि ज्ञान को नहीं माना जाय तो धर्म व्यक्तिगत और आत्मनिष्ठ हो जायगा।

(6) ज्ञान भावना की अपेक्षा उच्च है। भावनाएँ चंचल तथा परिवर्तनशील होती है। यदि धर्म का आधार भावना को बनाया जाए तो धर्म के आवश्यक अंग की व्याख्या नहीं हो सकती।

(7) धर्म में प्रतीकों (Symbols) के आधार पर सत्य की प्राप्ति होती है। प्रकृति और प्राकृतिक घटनायें धार्मिक विचारों के प्रतीक बन जाते है।

लेकिन ध्यान देने पर हम पाते है कि यह मत एकांगी है। इसके विरुद्ध आलोचकों ने अनेक आक्षेप किये है। उनकी युक्तियों को ज्ञानात्मक पक्ष के विरुद्ध तर्क (Arguments against cognitive element) कहा जाता है। अतः हम उन तर्कों का अध्ययन करेंगे।

(1) यदि ज्ञान को धर्म का मौलिक अंग माना जाए, तो उन व्यक्तियों को धार्मिक नहीं होना चाहिए जो अज्ञान तथा अशिक्षित है।

(2) धर्म का उद्देश्य साधक और ईश्वर के बीच तादात्मय - भाव उपस्थित करना है। एक भक्त ईश्वर के साथ निकटता का भाव उपस्थित करता है। परंतु ज्ञान भक्त की इस माँग की पूर्ति करने में असमर्थ है। अतः ज्ञान को धर्म का कहना भूल है।

(3) ज्ञान को धर्म का आधार मानने से ईश्वर को सिद्ध करना असंभव हो जाता है।

(4) ज्ञान को धर्म का आधार मानने से धर्म सैद्धान्तिक हो जाता है। धर्म वाद - विवाद का विषय बन जाता है। इसके विपरीत हमलोग जानते हैं कि धर्म का आधार व्यवहार (Practice) है।

(5) धर्म को मात्र ज्ञान का विषय मान लेने पर दर्शन और धर्म में भेद करना असंभव हो जायगा।

शेष अगले भाग में